सभी प्रकार की सरकारी सहायताओं से मुक्त, खोजी पत्रकारिता का तेज बढ़ता अखबार

दैनिक

themovementofindia.in

द मूवमेंट ऑफ़ इंडिया

RNI No. RAJHIN/2012/48876
पोस्टल पंजीयन नं. भीलवाड़ा / 2025-2027

खोजी खबरें-तेज नजरें

प्रेरणा स्रोत - स्व. चुन्नीलाल सालवी

ये अखबार ही नहीं क्रांति का अभियान है। मानवता एवं लोकतंत्र का सजग प्रहरी, ये दुष्टों की मौत का सामान है।

वर्ष - 14 अंक -21 | 08 जुलाई 2025,मंगलवार | संपादक - दयाराम दिव्य | सहसंपादक - चाहत सालवी | मूल्य - 2 रू.

भीलवाड़ा में फल-फूल रहे मेडिकल माफियाओं के खिलाफ जंग जारी, दवा घोटाले से गूंजा महात्मा गांधी अस्पताल

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा — जिले में मेडिकल माफियाओं का जाल लगातार फैलता जा रहा है। खुद को भोला-भाला श्रद्धालु बताकर ये लोग वर्षों से घोटाले और घपले करते आ रहे हैं। चाहे सरकार बदले या अफसर, इन माफियाओं के हौसले बुलंद ही रहते हैं। महात्मा गांधी अस्पताल जैसे संस्थान में मरीजों की जिंदगी से खिलवाड़ हो रहा है, और नकली दवाओं की आपूर्ति के मामले ने पूरे तंत्र को सवालों के घेरे में ला खड़ा किया है।नकली फार्मेसी से लेकर दलाली तक- गांधी जी के तीन बंदरों की तस्वीर उभरतीअस्पताल में स्थित फार्मेसी पर सवाल खड़े हो चुके हैं। फर्जी लाइसेंस, अमान्य

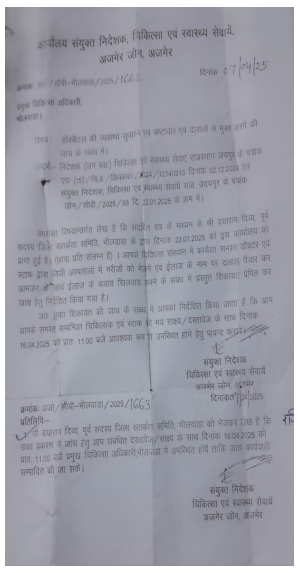

दवाएं, और दलालों की सक्रियता ने चिकित्सा व्यवस्था को बीमार कर दिया है। जिस जगह गांधीजी के आदर्शों की प्रतिध्वनि होनी चाहिए थी, वहां ÷दलाल, हलाल, कलाल÷ का खेल खेला जा रहा है।सहकारी उपभोक्ता भंडार भी सवालों के घेरे मेंपहले भी सहकारी उपभोक्ता भंडार की घटिया निर्माण सामग्री और संचालकों की मनमानी जनता की नजर में आ चुकी है। लेकिन सत्ता और प्रशासनिक गठजोड़ ने हमेशा मामले को दबाने की कोशिश की। शासन-प्रशासन और कथित जनप्रतिनिधि माफियाओं के संरक्षण में दिखाई दे रहे हैं।संविदा कर्मियों के सहारे धांधली का खेलसंविदा पर कार्यरत कर्मचारियों के ज़रिए नियमों को दरकिनार कर सरकारी संसाधनों की लूट हो रही है। ना जांच, ना जवाबदेही – नतीजा है मरीजों की मौत और चिकित्सा व्यवस्था में जनता का टूटता भरोसा।

कानून के हाथ लंबे हैं —

दैनिक The Movement of India के प्रधान संपादक दयाराम दिव्य ने इस पूरे प्रकरण पर तीखी टिप्पणी करते हुए कहा- सरकारें आएं या जाएं, लेकिन मेडिकल माफिया जनता की जिंदगी से खेलते रहेंगे – यह बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। कानून के हाथ लंबे हैं, और अब इन सफेदपोश घोटालेबाजों को जवाब देना होगा। भगवान शनि न्याय के देवता हैं और जनता की पुकार अब अंधेरे से बाहर आ रही है।

जय संविधान! सत्यमेव जयते !जनता को अब जागरूक होना होगा, क्योंकि जब दवा ही बीमारी बन जाए – तब खामोशी सबसे बड़ा अपराध बन जाती है।

15 दिन की बारिश में राजस्थान के 21 बांध फुल: रेगिस्तान में भी पानी की बौछार

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

राजस्थान में इस बार मानसून तय समय से 7 दिन पहले दस्तक देकर पूरे जून में जलवर्षा का ऐसा रिकॉर्ड बना गया, जिसे देखने को सालों बाद मौका मिला है। महज 15 दिन में ही राज्य के कई हिस्सों में पूरे महीने की बारिश का कोटा पूरा हो गया है। नतीजा यह हुआ कि प्रदेश के 692 बांधों में से 21 बांध लबालब भर गए हैं और 95 सूखे पड़े बांधों में भी पानी की आवक दर्ज हुई है। जून माह में हुई रिकॉर्ड तोड़ बारिश से न केवल दक्षिण-पूर्वी बल्कि पश्चिमी रेगिस्तानी इलाकों में भी अच्छी बरसात हुई है। मौसम विभाग ने जुलाई के शुरुआती दो सप्ताह के लिए भारी से अति भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। कोटा, उदयपुर, अजमेर, जयपुर और भरतपुर संभागों के जिलों में अगले 15 दिनों तक अच्छी बारिश की संभावना जताई गई है। बारिश का यह असर जल स्रोतों पर साफ दिखाई दे रहा है।

बीसलपुर बांध में पानी की आवक जहां आमतौर पर जुलाई में शुरू होती है, वहां इस बार 16 जून से ही पानी आना शुरू हो गया, जो अब तक जारी है। त्रिवेणी नदी भी जून में ही बहने लगी और चंबल पर बने कोटा बैराज के गेट जून में ही खोलने पड़े।

बारिश के पानी के साथ श्मशान का रास्ता बहा:अंतिम यात्रा निकालने में भी परेशानी

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

बीते दिनों हुई बारिश के बाद अब जिले के ग्रामीण इलाकों में लोगों को काफी समस्या हुई है। कई जगह घर ओर खेत में पानी भरने के साथ ही मोक्षधाम की सड़क भी बारिश से उखड़ गई। हालात ये हो गए की अंतिम संस्कार से पहले अंतिम यात्रा भी इस रोड से नहीं निकाल सकते ना अंतिम यात्रा की लकड़ियां अंदर ले जाई जा रही है।

जलभराव से मोक्षधाम में जाना असंभव

मामला भीलवाड़ा के हमीरगढ़ उपखंड क्षेत्र ग्राम पंचायत बिलिया कलां का है। यहां श्मशान स्थल तक पहुंचने वाले रास्ते पर बड़ी

मात्रा में बारिश के पानी से मिट्टी कटाव के कारण अब श्मशान तक पहुंचना का मार्ग बुरी तरह डैमेज हो गया। इसके चलते अंतिम यात्रा निकालने ओर डेड बॉडी अंदर ले जाने में काफी समस्या आ रही है। मिट्टी का कटाव ज्यादा हो गया है कि मोक्षधाम के अंदर जाना असंभव है। गांव के किशन गुर्जर ने बताया कि बीते दिनों गांव में काफी तेज बारिश हुई थी इसके चलते गांव पानी तेज स्पीड में बह के आया इसके चलते श्मशान के बाहर कच्चा रास्ता कट कर पानी के साथ बह गया। अब इस कटाव के चलते रोड बुरी तरह डैमेज हो गई ओर श्मशान घाट तक पहुंचने में बहुत बड़ी समस्या हो रही है।

यह समस्या आमजन एवं जनहित से जुड़ी है इस पर तत्काल कार्रवाई कर ग्रेवल मिट्टी डलवा कर रास्ते को सही करवाना चाहिए।इस संबंध में गांव के सरपंच को अवगत करवाया है लेकिन अभी समस्या बनी हुई है। हम चाहते हैं कि प्रशासन इस ओर ध्यान दे ओर हमारी समस्या का समाधान हो ।

चेहरा बदला, नाम बदला... एग्जाम पास

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

राजस्थान में सरकारी भर्तियों में फर्जीवाड़े का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने सोमवार को एक ऐसे डमी कैंडिडेट को जयपुर सेंट्रल जेल से प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया, जो ग्रेड सेकेंड टीचर भर्ती परीक्षा में मूल अभ्यर्थी की जगह एग्जाम देकर नौकरी हासिल करने की जालसाजी में शामिल था। आरोपी हरदानाराम बिश्नोई पहले से ही फर्जी डिग्री के जरिए पीटीआई की नौकरी पाने के मामले में जेल में बंद था। एसओजी एडीजी वीके सिंह के अनुसार, आरोपी हरदानाराम बिश्नोई (30), निवासी सियागांव राजीव नगर, सांचौर, बाड़मेर के मोखावा गुढ़ामालानी के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पीटीआई के पद पर कार्यरत था। दिसंबर 2022 में आयोजित ग्रेड सेकेंड टीचर भर्ती परीक्षा के दौरान आरोपी ने दिनेश कुमार नामक अभ्यर्थी की जगह परीक्षा दी। 29 जनवरी 2023 को उदयपुर के गिर्वा स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बालीचा परीक्षा केंद्र पर जब एग्जाम हुआ, तब फोटो मिलान में गड़बड़ी सामने आई। इसके बाद एसओजी ने मामले की जांच शुरू की और फोटो मिसमैच से असली चेहरा उजागर हुआ। एसओजी की जांच में सामने आया कि हरदानाराम ने पीटीआई भर्ती के लिए फर्जी डिग्री लगाकर ऑनलाइन आवेदन किया था। काउंसलिंग के दौरान संदेह होने पर उसके दस्तावेजों की जांच की गई, जहां फर्जी डिग्री की पुष्टि हुई। इस पर उसे गिरफ्तार

कर कोर्ट में पेश किया गया और न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

डमी कैंडिडेट बनकर दिलाई परीक्षा में सफलता

एसओजी के एडिशनल एसपी प्रकाश शर्मा ने बताया कि हरदानाराम ने ग्रेड सेकेंड परीक्षा में डमी कैंडिडेट के तौर पर भाग लिया और दिनेश कुमार की जगह परीक्षा पास करवाई। आरोपी का नेटवर्क सुनियोजित तरीके से कार्य कर रहा था, जिससे परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े हो गए हैं। परिवार भी शामिल फर्जीवाड़े में, बहन कॉन्स्टेबल थी

जांच में चौंकाने वाला पहलू यह भी सामने आया कि हरदानाराम की बहन संगीता बिश्नोई जालोर में पुलिस कॉन्स्टेबल थी। उसने भी विमला बिश्नोई नाम की मूल अभ्यर्थी की जगह परीक्षा में बैठकर धोखाधड़ी की थी। जब विमला की गिरफ्तारी हुई, तब संगीता फरार हो गई। वर्तमान में उसे सस्पेंड कर दिया गया है।

एसओजी की पड़ताल से खुला बड़ा रैकेट - एसओजी की इस कार्रवाई से यह स्पष्ट होता है कि राजस्थान की प्रतियोगी परीक्षाएं एक संगठित गिरोह के निशाने पर हैं, जो पैसे और पहचान बदलकर नकल और फर्जी डिग्री से सरकारी सेवाओं में घुसपैठ कर रहा है।

बजरी माफिया ने ग्रामीणों पर कैंपर चढ़ाया, 5 गंभीर:लीज को लेकर खूनी संघर्ष में 12 लोग घायल

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

मेड़ता (नागौर) रियांबड़ी क्षेत्र में बजरी लीज को लेकर लंबे समय से चल रहा विवाद सोमवार को खूनी संघर्ष में बदल गया। बजरी माफिया ने ग्रामीणों पर कैंपर चढ़ा दी। इस घटना में 12 ग्रामीण घायल हो गए। इसमें से 5 की हालत गंभीर है। इन्हें अजमेर रेफर किया गया है। ग्रामीणों ने बजरी से भरे डंपर को रोकने की कोशिश की थी। दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया है। उधर, मामला तूल पकड़ने लगा तो तहसीलदार ने 21 जुलाई तक बजरी खनन नहीं करने का नोटिस मौके पर चस्पा करा दिया है। इससे पहले सोमवार रात करीब 12 बजे तक पुलिस प्रशासन और ग्रामीणों के बीच करणी माता मंदिर के पास बातचीत का दौर चलता रहा था।

रियांबड़ी की करणी माता मंदिर के पास स्थित लीज और सुरियास की लीज को आगामी आदेशों तक अस्थायी रूप से बंद रखने पर सहमति बनी है।

बजरी के डंपर को रोकने के बाद बढ़ा विवाद

रियाबड़ी SHO भारमल ने बताया- 7 जुलाई की शाम करीब 7 बजे रियांबड़ी इलाके के रोहिशा रोड स्थित आड़ा मार्ग चौराहे के पास जमकर विवाद हुआ। ग्रामीणों ने बजरी से भरे एक डंपर को रोक लिया। इसके बाद ग्रामीणों और लीजधारकों के बीच झड़प हो गई। आरोप है कि इस दौरान ग्रामीणों को कैंपर से कुचलने का प्रयास किया गया। घटना के बाद बड़ी संख्या में लोग रियाबड़ी हॉस्पिटल पहुंचे और लीज बंद करने तथा हमले के आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया। रात 12 बजे के बाद हॉस्पिटल परिसर के बाहर खींवसर के पूर्व विधायक नारायण बेनीवाल, पूर्व विधायक इंदिरा देवी बावरी, एसडीएम सुरेश केएन तथा पुलिस अधिकारियों के बीच बात हुई।

इस मामले में दूसरे पक्ष ने ग्रामीणों पर लीज स्थल पर वाहनों में तोड़फोड़ कर नुकसाने पहुंचाने का आरोप लगाते हुए मामला दर्ज कराया है।

ग्रामीणों ने दी आंदोलन की चेतावनी

बातचीत के दौरान ग्रामीणों ने स्पष्ट किया है कि यदि उनकी सभी मांगें नहीं मानी गई, तो वे दोबारा आंदोलन करेंगे। फिलहाल पुलिस और प्रशासन ने हालात पर नियंत्रण बनाए रखा है। ग्रामीणों में आक्रोश अब भी बरकरार है। ग्रामीणों ने दो एफआईआर दर्ज करवाई है। वे दोषियों की गिरफ्तारी की मांग पर अड़े हुए हैं। उनका आरोप है कि यह हमला सुनियोजित तरीके से किया गया और इसमें बजरी माफिया लिप्त हैं।

सम्पादकीय

केरल से कुछ सीखें अन्य सरकारें

छात्रों की सेहत और सकारात्मकता से जुड़ी केरल शिक्षा विभाग की जुंबा जैसी पहल बहुत सराहनीय है। ऐसी पहल की लंबे समय से प्रतीक्षा थी। एक्सरसाइज यानी किसी प्रकार की कसरत सरीखी गतिविधि तनाव बढ़ाने वाले कार्टिसोल जैसे हार्मोन को घटाने में बड़ी मददगार होती है। तनाव बढ़ने पर ही अक्सर बच्चे और किशोर नशाखोरी की गिरफ्त में आ जाते हैं। ऐसे में संगीत की थाप पर चलने वाली जुंबा जैसी गतिविधि बहुत उपयोगी प्रतीत होती है। यह बच्चों एवं किशोरों को किसी भौतिक सजा के बजाय आनंद की अधिक अनुभूति कराती है। राज्य में बीते दो वर्षों के दौरान नाबालिगों में नशाखोरी से जुड़े मामले बढ़े हैं, उसे देखते हुए एक अनुभव आधारित व्यावहारिक समाधान की आवश्यकता महसूस हो रही है, जिसे हर कक्षा में सहजता से लागू किया जा सके। हर अच्छी पहल में खलल डालने के लिए कुछ विघ्नसंतोषी सदैव सक्रिय रहते हैं। जुंबा डांस मामले में भी ऐसा ही हुआ और विजडम इस्लामिक आर्गेनाइजेशन नाम की संस्था इसके विरोध में उतर आई। संस्था के महासचिव टीके अशरफ ने जुंबा को डीजे शैली वाला बताते हुए कहा कि इसमें लड़के-लड़कियां 'अधनंगे' होकर नाचते हैं। एक अन्य संगठन-समस्ता से जुड़े मौलवियों ने भी उनके सुर में सुर मिलाते हुए जुंबा को अश्लील करार दिया। इस चौंकाने वाली आलोचना का सरोकार इस शैली या सार्वजनिक स्वास्थ्य से न होकर 'हया' जैसी इस्लामिक मान्यता से कहीं ज्यादा था। जब ऐसी मजहबी दलीलों का मजाक बनाया जाने लगा तो विरोध करने वालों ने स्वर बदलते हुए इस मामले में 'परामर्श' और 'दीर्घकालिक अध्ययन' की दुहाई देनी शुरू कर दी। यह और कुछ नहीं अपनी मूल मंशा को छिपाने के लिए गोलपोस्ट बदलने जैसा था, जिसमें कथित नैतिक आग्रह जुड़े हुए थे।

प्रधान संपादक - दयाराम दिव्य

हमीरगढ़ क्षेत्र के ग्राम पंचायत खैराबाद के नाथडीयास गांव के भील समाज ओर ग्राम वासियों ने दिया जिला कलक्टर को ज्ञापन

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

हमीरगढ़ (अनिल डांगी) क्षेत्र के ग्राम पंचायत खैराबाद के नाथडीयास ग्रामवासियों ने आज जिला कलक्टर को ज्ञापन सौंपा और सरपंच के खिलाफ नारे बाजी की ग्राम वासियों का कहना हे कि पिछले करीब 15 वर्षों से पानी की पाइप लाइन बंद पड़ी हे सड़कों का कोई निर्माण नहीं हुआ ग्राम वासियों का कहना हे कि भील समाज की बस्ती में रोड नाली पानी की पाइप लाइन इन सभी का काम अटका रखा हे पूर्व सरपंच भगवत सिंह ने हमारे गांव के विकास में रोड़ा अटका रखा हे उनका कहना हे कि जिस ने मुझे बोट दिया उसी के मोहल्ले में विकास कार्य होगा इस बात को लेकर के सभी ग्राम वासी आज इकठ्ठा होकर जिला कलक्टर को ज्ञापन सौंपा और अपनी पीड़ा बताई जिस में ग्राम पंचायत के सदस्य ओर भील समाज के लोग और महिलाएं रही मौजूद

आर यू आई डी पी जागरुकता कार्यक्रम में छात्राओं को एफ एस टी पी के फायदों व हाथ धोने के 10 स्टेप की जानकारी दी

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

राजेन्द्र खटीक शाहपुरा!

शाहपुरा राजस्थान नगरीय आधारभूत विकास परियोजना आरयूआईडीपी की सामुदायिक जागरूकता एवं जन सहभागिता इकाई के जागरूकता कार्यक्रम के तहत परियोजना कार्यो की जानकारी पीएम श्री राजमाता मणिक कंवर राजकीय उच्च माध्यमिक बालिका विद्यालय कार्यक्रम में कैप जयपुर इकाई से सौरभ पांडे ने उपस्थित विधार्थियो को बताया की साफ सफाई, स्वच्छ का पूरा ध्यान रखे जिससे मच्छर ,मक्खी न हो और बड़ी बीमारियों जैसे डेंगू ,मलेरिया से बचाव हो जाये। अतः मौसमी बीमारियों से बचाव हो सके इसका ध्यान रखे। इस विद्यालय जागरुकता कार्यक्रम में छात्राओं को बताया कि आपके घरों के सेप्टिक टैंकों से निकलने वाले मल-जल को टैंकों में भरकर जाजपुर रोड पर बन रहे एफएसटीपी में ले जाया जाएगा, वहां इसको ट्रीट कर खाद बनाया जाएगा और वानिकी, पेड़ो में उपयोग लिया जाएगा, इसेन निस्तारण के समय जो गंदगी होती थी उससे निजात मिलेगी व वातावरण स्वच्छ रहेगा साथ ही छात्रों को हैंड वॉशिंग के 10 स्टेप के बारे में जानकारी दी कार्यक्रम में सहायक सामाजिक विकास एवं जेंडर सपोर्ट महेंद्र सिंह राणावत नगर परिषद के स्वच्छता इंजीनियर प्रहलाद गुलपारिया , प्रधानाचार्य रीटा धोबी विद्यालय के अध्यापक का सहयोग रहा इस गतिविधि में 200 छात्रा ने भाग लिया।

मनोहरपुरा में एक दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

राजेन्द्र खटीक शाहपुरा!

जहाजपुर! ग्राम पंचायत मनोहरपुरा में सोमवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय सबल पखवाड़ा 2025,के अतर्गत एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें ग्रामीणों की समस्याओं का मौक पर ही समाधान किया गया है इस मे विशेष शिविर में राजस्व विभाग से नायक तहसील पटवारी उपखंड अधिकारी एसडीएम ग्राम विकास अधिकारी कृषि विभाग शिक्षा विभाग पशुपालन विभाग सहित अन्य कई विभागों के अधिकारी है एवं कर्मचारी मौजूद रहे हैं शिविर में आमजन को सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी गई है और शिविर में लाभ दिलाने कि दिशा में तुरंत कार्रवाई की है। शिविर में मुख्य रूप से हमारे विधायक साहब गोपीचंद के उपस्थित में ही संपूर्ण हुआ है। मनोहरपुरा पंचायत में विधायक साहब और हमारे सरपंच मोहन जी गुजर अनेक कार्य का शिलान्यास किया है। हमारे यहां देवनारायण मंदिर की सराई का शिलान्यास किया और हमारे चारभुजा मंदिर की सराई काम शिलान्यास किया है और हमारे मनोहरपुरा गांव में विधायक साहब और हमारे सरपंच मोहन जी गुजर के नेतृत्व में पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए उपस्थित जन-प्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं ने वक्षारोपण को जीवन शैली में शामिल करने की अपिल की हमारे ग्राम पंचायत मनोहरपुरा के शिविर में सरपंच मोहन जी गुजर के नेतृत्व में जोबकाड या पटा वितरित किया गया है शिविर में अनेक जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे हैं।जिससे विधायक साहब गोपीचंद जीशक्कर गढ़ पूर्व सरपंच किशोर जी शर्मा सरपंच मोहन जी गुजर सत्य नारायण शर्मा नरेश जी रमेश जी कास्ट नंद भंवर सिंह पूर्व मंडल अध्यक्ष नाथू जी मीणा धर्मराज मीणा मंडल अध्यक्ष सभी जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे थे संवादाता रामलाल मेघवंशी ने जानकारी दी।

मांडल विधायक के जन्म दिवस पर पौधारोपण

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

आमली गढ।राजकीय प्राथमिक विद्यालय काबरा गांव के शिक्षक व स्थानीय ग्रामीणों के साथ सहभागिता कर राजकीय प्राथमिक विद्यालय में एवं हनुमान जी की वाटिका में 51 पौधे लगाकर मांडल के यशस्वी विधायक श्रीमान उदय लाल जी भडाणा का पौधा रोपण कर जन्मदिन मनाया एवं शुभकामनाएं प्रेषित की श्री वैष्णव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के तीसरे कार्यकाल की अनूठी उपलब्धि मानते हुए उन्हें राजस्थान की जनता की ओर से साधुवाद देता हूं इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक पेड़ मां के नाम अभियान ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने धरती का तापमान कम करने भूजल स्तर को ऊपर लाने और प्रदूषण नियंत्रण में महत्वपूर्ण योगदान करने में समर्थ होगा पर्यावरण संरक्षण के अवसर पर लोगों को प्रकृति को सुंदर बनाने और पर्यावरण संतुलन के लिए अधिक से अधिक पौधे लगाने का विशेष रूप से आग्रह किया और पौध रोपण के साथ ही उन्हें बचाने के लिए भी लोगों को संकल्प दिलाया पर्यावरण संरक्षण हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है आज का लगाया पौधा आने वाली पीढ़ियों को हरियाली और स्वच्छ वायु प्रदान करेगा एक पेड़ अपनी मां के नाम अवश्य लगाएं और अपने गांव शहर और प्रदेश को हरियाला बनाने में सहभागी बने इस कार्यक्रम में उपस्थित स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं शिक्षक हमीर शेख हरीश जी गर्ग शंकर लाल जी सेन आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे

भीम आर्मी जिलाउपाध्यक्ष का पौधा लगाकर बनाया जन्म दिवस दिया शिक्षा पर जोर और अस्तित्व बचाओ अभियान की शुरुआत की

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

राजेन्द्र खटीक शाहपुरा!

काछोला - काछोला सांवरिया रिसोर्ट मे डॉ अंबेडकर विचार मंच के तत्वावधान में आयोजित भीम आर्मी जिलाउपाध्यक्ष दुर्गा लाल बैरवा के जन्मदिन बनाया गया जिसमें अम्बेडकर विचार मंच के जिलाध्यक्ष सुरेश चन्द्र घुसर ने बताया कि आज के समय मे हम-सब को शिक्षित होना बहुत जरूरी है हम शिक्षित होंगे तभी आगे बढ़ेंगे और अपने परिवार का अपने समाज का विकास कर पाएंगे।हमे भारत मे एक अलग पहचान बनानी है।डॉ. बाबा साहब ने कहा था शिक्षित बनो,संगर्ष करो और संगठित रहो ऐसे सिद्धान्तों पर हमें चलना है।शिक्षा वह शेरनी का दुध है जो पियेगा वही दहाड़ेंगे इसलिए हमें शिक्षित होना बहुत जरूरी है और जहाजपुर से रामजस मीणा ने बताया है कि हमे हमारा अस्तित्व बचने के लिए शिक्षित होना अति आवश्यक है व संगठित होना भी जरूरी है इनके साथ-साथ हमे संगर्ष भी करना है तब जाके हम आगे बढ़ेंगे।इसलिए हमारे लिए शिक्षा ही सर्व श्रेष्ठ है।इस कार्यक्रम में सभी ने बाबा साहब के नारे लगाए जिसमे जय भीम,जय संविधान,जय जोहर और नमो बुद्धाय के नारे लगाए गए।इस कार्यक्रम में शाहपुरा विधायक प्रत्याशी नरेन्द्र कुमार रेगर,अम्बेडकर विचार मंच के जिलाध्यक्ष सुरेश चन्द्र घुसर, भीम आर्मी जिलाध्यक्ष सावर लाल रेगर,संवाददाता राजेन्द्र खटीक, अध्यक्ष डॉ अंबेडकर विचार मंच जहाजपुर रामजस मीणा,अध्यापक भोजराज मेंगवशी,भीम आर्मी अध्यक्ष मांडलगढ़ ओमप्रकाश खटीक आजाद समाज पार्टी जिलाध्यक्ष भेरू लाल रेगर, अंबेडकर विचार मंच काछेला के पूर्व अध्यक्ष डालचंद के सुपुत्र राकेश मेंगवंशी राजस्थान शिक्षक संघ प्रदेश उपाध्यक्ष राजमल रेगर, काछेला विचार मंच अध्यक्ष मुकेश कुमार मेघवंशी,प्रभारी भीम आर्मी मांडलगढ़ रामेश्वर बसेटिया, बिजौलिया विचार मंच अध्यक्ष किशन लाल खटीक, खजुरी भीम आर्मी सह प्रभारी रामलाल मेंगवंशी व सामाजिक कार्यकर्ता अर्जन जी बैरवा, भीम आर्मी सहप्रभारी विकाश खटीक आदि सदस्य मौजूद रहे।हमारे विचारो को बाबा साहेब के सदस्य भैरू लाल रैगर गुड़गांव, शैतान बैरवा रतनपुरा,भीम आर्मी सदस्य देवी लाल बैरवा अखेपुरा, राधेश्याम बैरवा रामनगर, किशन बैरवा, दिनेश बैरवा, राजू गुलगांव वाले हमारे हर समय कोर्ट में साथ सहयोग कानूनी कार्रवाई करने वाले।

एडवोकेट कन्हैया लाल जी भीलवाड़ा सहित सभी सदस्य उपस्थित रहे।

दिल्ली में शीशमहल बनाम जन सेवा सदन!

भारतीय जनता पार्टी ने दिल्ली का विधानसभा चुनाव शीशमहल के मुद्दे पर लड़ा था। आम आदमी पार्टी के सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली का मुख्यमंत्री रहते जो सरकारी बंगला बनवाया था उसे बनाने और उसकी साज सज्जा पर 50 करोड़ रुपए खर्च हुए थे। भाजपा ने उसकी तस्वीरें और वीडियो जारी करके उसे शीशमहल बताया और उसी मुद्दे पर चुनाव लड़ा। दूसरी कई चीजों के साथ साथ शीशमहल का विवाद केजरीवाल की आम आदमी की छवि ध्वस्त करने में कारगर साबित हुई। उनके बनाए सारे मिथक इससे टूटे थे। तभी जब दिल्ली में भाजपा की सरकार बनी तो कह दिया गया कि केजरीवाल ने मुख्यमंत्री के लिए जो आधिकारिक बंगला बनाया है उसमें भाजपा की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता नहीं रहेंगी। भाजपा ने लंबे समय के लिए शीशमहल को मुद्दा बनाए रखने के मकसद से यह फैसला किया। अब दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को राजनिवास मार्ग पर दो बड़े बंगले आवंटित हुए हैं। अगल बगल के इन दो बंगलों को जोड़ कर मुख्यमंत्री का कैम्प कार्यालय और आवास बनाया जा रहा है। इसकी साज सज्जा का काम शुरू हुआ तो एक बड़ा कार्यक्रम रखा गया। पूजा की गई। मुख्यमंत्री का पूरा परिवार इसमें शामिल हुआ और साथ ही उप राज्यपाल भी शामिल हुए। अगले तीन महीने में बंगला बन कर तैयार होगा और नवरात्रों के समय मुख्यमंत्री उसमें शिफ्ट होंगी। इन दोनों बंगलों की साज सज्जा पर भी करोड़ों रुपए खर्च हो रहे हैं। इनमें 24 एसी लगने वाले हैं और फोर के रिजोल्यूशन वाले पांच बड़े टेलीविजन सेट से लेकर नए टाइल्स, परदे आदि के ऑर्डर हुए हैं। इन दो बंगलों में से मुख्यमंत्री के कैम्प कार्यालय को जन सेवा सदन नाम दे दिया गया है। यानी केजरीवाल ने करोड़ों रुपए खर्च करके जो कैम्प कार्यालय और आवास बनवाया वह शीशमहल है और रेखा गुप्ता को बनवाएंगी वह जन सेवा सदन है। इतने भर से करोड़ों रुपए का खर्च जस्टिफाई हो जाएगा।

ऐसे कैसे अंग्रेजी वाले शर्मिंदा होंगे

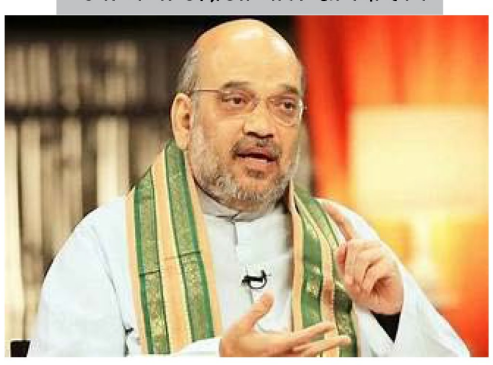

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कुछ दिन पहले कहा था कि बहुत जल्दी, हमारे जीवनकाल में ही भारत में अंग्रेजी बोलने वाले शर्मिंदा होंगे। हालांकि बाद में उन्होंने कहा कि किसी भी भाषा का अपमान नहीं होना चाहिए। ध्यान रहे राजभाषा विभाग सीधे केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत आता है, जिसके मंत्री अमित शाह हैं। उनका मंत्रालय और भारत सरकार के दूसरे मंत्रालय भी हिंदी को प्रोत्साहित कर रहे हैं। केंद्रीय मंत्री ललन सिंह ने अपने मंत्रालय में हिंदी में ज्यादा अच्छा कामकाज करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए नकद इनाम की घोषणा की है। लेकिन क्या ऐसे उपायों से हिंदी प्रतिष्ठित होने जा रही है और अंग्रेजी वाले शर्मिंदा होने जा रहे हैं? इस हिंदी और अंग्रेजी के विवाद के बीच केंद्रीय विश्वविद्यालयों में दाखिले के लिए हुई सीयूईटी की परीक्षा के नतीजे आए हैं और उसके कुछ आंकड़े भी सामने आए हैं। इस साल सीयूईटी की परीक्षा में करीब 11 लाख छात्र शामिल हुए थे। इन 11 लाख में से 8.73 लाख छात्रों ने अंग्रेजी में परीक्षा दी और सिर्फ 1.8 लाख छात्रों ने हिंदी में परीक्षा दी। सोचें, देश के सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों और उसके कॉलेजों में दाखिले के लिए 80 फीसदी से ज्यादा छात्र अंग्रेजी में परीक्षा दे रहे हैं! इसका साफ मतलब है कि आगे जो भी नीति नियंता बनेंगे या अधिकारी, कर्मचारी बनेंगे उनमें इस अनुपात से भी ज्यादा यानी 80 फीसदी से ज्यादा अंग्रेजी वालों का स्थान होगा। फिर अंग्रेजी वाले कैसे शर्मिंदा होंगे?

श्यामा प्रसाद मुखर्जी एक महान व्यक्तित्व!

आज भारत माता के महान सपूत डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जन्म जयंती है। 124 साल पहले 1901 में छह जुलाई को उनका जन्म हुआ था। अगले साल उनकी सवा सौवीं जयंती मनाई जाएगी। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में आजादी की लड़ाई के योद्धा के तौर पर और उसके ठीक बाद एक राष्ट्र के रूप में भारत को गढ़ने और उसे एक दिशा देने में डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने महान योगदान दिया था। उनकी जयंती के मौके पर कृतज्ञ राष्ट्र अत्यंत आदर और लगाव के साथ उनका स्मरण कर रहा है। वे भारत के सर्वाधिक प्रेरक व्यक्तित्वों में से एक हैं, जिन्होंने राजनीति, समाज, राष्ट्रीय सुरक्षा, शासन-प्रशासन और आर्थिक नीतियों को अपने विचारों से प्रभावित किया। भारत की एकता और अखंडता के लिए किया गया उनका संघर्ष भारत की अमूल्य धरोहर है। वे भारतीय राजनीति के उन विरले लोगों में हैं, जिन्होंने सबसे पहले जम्मू कश्मीर के अलग संविधान का मुद्दा उठाया। उन्होंने उसे समाप्त करके जम्मू कश्मीर के भारत में संपूर्ण एकीकरण के मुद्दे को अपना जीवन संघर्ष बनाया और उस पर अपने प्राण न्योछावर किए। पांच अगस्त 2019 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने अनुच्छेद 370 समाप्त करके जम्मू कश्मीर का संपूर्ण और वास्तविक एकीकरण भारत के साथ किया। यह डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी को सच्ची श्रद्धांजलि थी। डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी किसी अन्य सामान्य राजनेता की तरह एक नेता नहीं थे, बल्कि जननेता होने के साथ साथ वे एक महान चिंतक और समाज सुधारक थे। वे एक महान स्वतंत्रता सेनानी भी थे। आजादी की लड़ाई में कांग्रेस ही हर विचारधारा के लोगों का मंच थी। तभी उसके साथ मिल कर डॉक्टर मुखर्जी ने अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया था। यह सही है कि डॉ. मुखर्जी ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत कांग्रेस से की थी, लेकिन बाद में वे उसकी नीतियों से असंतुष्ट और निराश हो गए। मुस्लिम लीग से कांग्रेस के नीतिगत समझौतों की वजह से उनका कांग्रेस से मोहभंग हुआ। इसी वजह से वे 1939 में हिंदू महासभा से जुड़ गए। उस समय हिंदू महासभा एक महत्वपूर्ण राष्ट्रवादी संगठन था, जो हिंदू हितों और भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए आंदोलन करता था। डॉक्टर मुखर्जी 1944 में हिंदू महासभा के अध्यक्ष बने और इस पद पर रहते उन्होंने कई महत्वपूर्ण काम किए। उन्होंने भारत में मुस्लिम लीग के 'दो राष्ट्र सिद्धांत' की विचारधारा का खुलकर विरोध किया। उन्होंने कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीतियों पर सवाल उठाए और उसका विरोध किया। डॉक्टर मुखर्जी ने कांग्रेस, हिंदू महासभा और बाद में भारतीय जनसंघ के मंच से भारतीय राष्ट्रवाद, एकता और अखंडता के लिए अनथक संघर्ष किया। उनका जीवन, उनके विचार और उनके कार्य हर भारतवासी को राष्ट्रवाद की सच्ची भावना से परिचित कराते हैं। उनकी जयंती हमें उनके संघर्षों, भारतीय राजनीति और समाज व्यवस्था में उनके योगदान और उनके विचारों को याद करने का अवसर देती है। वे हमेशा एक अन्यतम स्वतंत्रता सेनानी, एक महान राजनेता, उद्भट विद्वान, मौलिक चिंतक और समाज सुधारक के रूप में याद किए जाएंगे। कश्मीर के संबंध में डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी का दृष्टिकोण भारतीय राजनीति में अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक रहा। उन्होंने कश्मीर में भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 लागू करने का विरोध किया था। उनका कहना था कि कश्मीर को विशेष अधिकार देने से भारत की एकता और अखंडता को नुकसान पहुंचेगा। उन्होंने 'एक प्रधान, एक निशान, और एक संविधान' का आह्वान किया था। वे आजादी के बाद पंडित जवाहर लाल नेहरू की सरकार में मंत्री बने थे लेकिन कश्मीर के मसले पर उन्होंने अपने विचारों से कभी समझौता नहीं किया। उन्होंने 1953 में कश्मीर में भारतीय संविधान को पूरी तरह से लागू करने की मांग उठाई और कहा कि अगर भारत का संविधान वहां लागू होगा तभी यह प्रमाणित होगा कि कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है। उनका यह

संघर्ष भारत की एकता और अखंडता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ। हालांकि इसकी कीमत उनको अपनी जान गंवा कर चुकानी पड़ी। कश्मीर यात्रा के दौरान 1953 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इसी संघर्ष के दौरान 23 जून 1953 को पुलिस हिरासत में नगर में रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई। उनके बलिदान ने भारतीय राजनीति को एक नई दिशा दी। उनके द्वारा स्थापित भारतीय जनसंघ उनके मूल्यों को लेकर आगे बढ़ा और आज दुनिया के सबसे बड़े राजनीतिक दल के तौर पर प्रतिष्ठित है। डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारत की एकता और अखंडता की रक्षा के लिए जिस वीरता और समर्पण का परिचय दिया उसे अनंतकाल तक याद किया जाता रहेगा। डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के तत्कालीन सर संघचालक माधव राव सदाशिव राव गोलवलकर यानी गुरूजी से विचार विमर्श के बाद 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना की। उनके साथ बलराज मधोक और पंडित दीनदयाल उपाध्याय भी उस उपक्रम में शामिल थे। वही भारतीय जनसंघ आज भारतीय जनता पार्टी के रूप में पुष्पित और पल्लवित हुआ है। देश की आजादी के बाद एक नए राजनीतिक दल के गठन का उनका उद्देश्य भारत में एक मजबूत और सशक्त राष्ट्रवाद की विचारधारा को स्थापित करना था। भारतीय जनसंघ को उन्होंने कांग्रेस के आइडिया ऑफ इंडिया के मुकाबले एक वैकल्पिक विचार के रूप में स्थापित किया, जो भारतीय समाज के सांस्कृतिक और राजनीतिक मूल्यों को ध्यान में रख कर कार्य करती थी। भारतीय राजनीति में उनका अमूल्य योगदान सिर्फ भारतीय जनसंघ की स्थापना नहीं है, बल्कि सांस्कृति राष्ट्रवाद की भावना का विस्तार उनका सबसे अहम योगदान है। डॉक्टर मुखर्जी का मानना था कि भारतीय समाज की जड़ों में भारतीय संस्कृति और हिंदू सभ्यता के मूल तत्व हैं। उन्होंने भारतीय समाज में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की बात की, और इस बात पर जोर दिया कि भारत की ताकत उसकी सांस्कृतिक धरोहर, उसकी गौरवशाली इतिहास और हिंदू जीवन मूल्यों में निहित है। उन्होंने अंग्रेजों की बनाई भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार करके उसके जरिए भारतीय संस्कृति को प्रोत्साहित करने का रास्ता दिखाया। डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने दलगत राजनीति से ऊपर हमेशा हिंदू समाज की एकता और सामूहिकता को बढ़ावा देने पर जोर दिया। उन्होंने हिंदू समाज को जागरूक किया, उसे तुष्टिकरण की राजनीति के प्रति आगाह किया और आयातित विचारों से प्रभावित सांप्रदायिक ताकतों से बचाने के उपाय किए। उन्होंने हमेशा भारतीय समाज में विविधता को सम्मान देने और उसे संरक्षित रखने का महत्व बताया। वे उन विरले लोगों में से थे, जिन्होंने इस देश के हिंदुओं को अपने इतिहास और संस्कृति के प्रति गर्व महसूस करने की सीख दी। उन्होंने हिंदू समाज में एकता को प्रोत्साहित करने के लिए समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के प्रति न्याय और समानता की बात कही। उन्होंने धर्म, जाति, और समुदाय के भेदभाव को समाप्त करने का आह्वान किया और भारतीय समाज में एक समानता की ओर कदम बढ़ाने का समर्थन किया। वे भारत की कल्पना एक सशक्त राष्ट्र के तौर करते थे और चाहते थे कि उसमें हिंदू संस्कृति को गौरवपूर्ण स्थान मिला लेकिन साथ ही यह भी चाहते थे कि बाकी सभी धर्मों का सम्मान भी बना रहे। राजनीति और समाज में ठोस योगदान की उनकी समझ अपनी शिक्षा दीक्षा और आरंभिक संस्कारों से बनी थी। वे बेहद योग्य और विद्वान व्यक्ति थे। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक और फिर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की थी। वे भारतीय संस्कृति और समाज के गहरे जानकार थे और हमेशा यह मानने थे कि भारतीयता के विकास के लिए एक मजबूत शैक्षिक ढांचे की आवश्यकता है। वे हमेशा कहते थे कि शिक्षा के विकास से ही भारत दुनिया में अग्रणी बन पाएगा और अपने गौरवशाली इतिहास की पुनरावृत्ति कर पाएगा। अपनी शिक्षा और देश बुनियादी समस्याओं के प्रति गहरी अंतर्दृष्टि के आधार पर वे यह मानते थे कि भारत में समाज के साथ साथ आर्थिक सुधार की भी अत्यंत आवश्यकता है। उन्होंने हमेशा एक स्वतंत्र और सशक्त आर्थिक नीति की आवश्यकता महसूस की। जिस समय देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाने की ओर बढ़ रहे थे उस समय डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने राज्य के नियंत्रण के बजाए निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करने का समर्थन किया। उनका मानना था कि एक राष्ट्र की ताकत उसकी आर्थिक स्वतंत्रता से होती है। अंततः डॉक्टर मुखर्जी ही सही प्रमाणित हुए। डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म छह जुलाई 1901 को तब के कलकत्ता में हुआ था। उनके पिता आशुतोष मुखर्जी बंगाल प्रेसीडेंसी के कलकत्ता हाई कोर्ट के न्यायाधीश और समाजसेवी थे। उनका जन्म ऐसे परिवार में हुआ था, जो शिक्षा और समाज सेवा के प्रति समर्पित था। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रेसीडेंसी कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की। विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद इंग्लैंड में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। वैज्ञानिक व तकनीकी शिक्षा के साथ साथ कानून की शिक्षा ने उनके विचारों और दृष्टिकोण को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तभी उनका व्यक्तित्व सिर्फ राजनीतिक नहीं, बल्कि बौद्धिक दृष्टिकोण से भी बेहद प्रभावशाली था। डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी का राजनीति में प्रवेश उनके विद्यार्थी जीवन में ही हुआ था और बाद में राजनीति के साथ जुड़ाव गहरा होता गया। वे इसे सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक सुधारों के लिए बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। इन्हीं विचारों को ध्यान में रख कर उन्होंने 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना की, जिसका उद्देश्य एक मजबूत और अखंड भारत का निर्माण करना था। वे हमेशा भारत की कल्पना एक सशक्त लेकिन उदार राष्ट्र के रूप में करते थे जो किसी भी प्रकार की विदेशों से प्रभावित राजनीति और विचारधारा से मुक्त हो। उनका यह भी मानना था कि भारतीय राजनीति को धार्मिक और सांस्कृतिक आधार पर एकजुट किया जाना चाहिए और इसके लिए वे राष्ट्रवाद के प्रचार प्रसार आवश्यक मानते थे। उनकी 124वीं जयंती पर कृतज्ञ राष्ट्र उनके जीवन के संघर्षों और विचारों को बड़े सम्मान के साथ याद कर रहा है। हमें आशा करनी चाहिए कि अगले साल आने वाली उनकी सवा सौवीं जयंती का समारोह पूरे देश में धूमधाम से मनाया जाए और इस अवसर पर उनको सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया जाए। उनकी सवा सौवीं जयंती के समारोहों की शुरुआत इस साल छह जुलाई से हो सकती है। पूरे साल चलने वाले समारोहों के जरिए पश्चिम बंगाल के करीब 10 करोड़ों लोगों के साथ साथ भारत के समस्त नागरिकों को डॉक्टर मुखर्जी के महान राष्ट्रवादी विचारों से परिचित कराया जाए और हिंदू समाज को अपने धार्मिक और सामाजिक मूल्यों के आधार पर एकजुट करने का प्रयास किया जाए। अगर भारत एक सशक्त और उदार राष्ट्र बनता है, जिसमें हिंदू विचार को गौरवपूर्ण स्थान मिलता है तो यह डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

चुनाव आयोग के लिए देश से अलग है बिहार!

यह लाख टके का सवाल है कि क्या भारत सरकार और चुनाव आयोग जैसी संवैधानिक संस्थाओं का आधार से मोहभंग हो रहा है? आधार की मान्यता समाप्त की जा रही है? यह सवाल बिहार में चल रहे मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण के अभियान से उठा है। बिहार में आठ करोड़ मतदाताओं का गहन पुनरीक्षण हो रहा है। सभी मतदाताओं को फिर से अपना नाम मतदाता सूची में दर्ज कराने को कहा गया है। राज्य चुनाव आयोग की ओर से छह हजार रुपए पर नियुक्त बूथ लेवल ऑफिसर यानी बीएलओ सबके घर फॉर्म पहुंचा रहे हैं और उसके बाद भरा हुआ फॉर्म, फोटो और जन्म प्रमाणित करने वाले सर्टिफिकेट कलेक्ट करेंगे। चुनाव आयोग ने जन्म प्रमाणित करने वाले दस्तावेज के तौर पर आधार को प्रमाण मानने से इनकार कर दिया है। आधार, मनरेगा कार्ड और राशन कार्ड के आधार पर बिहार में कोई भी व्यक्ति मतदाता नहीं बन सकता है। क्या यही नियम दिल्ली में या दूसरे किसी राज्य में भी है? क्या दिल्ली में कोई व्यक्ति

आधार कार्ड के जरिए मतदाता सूची में नाम नहीं दर्ज करा सकता है? अगर आधार के दम पर दिल्ली या देश के किसी दूसरे हिस्से में कोई व्यक्ति मतदाता बन सकता है तो बिहार में क्यों नहीं बन सकता है? क्या बिहार के 14 करोड़ लोगों को चुनाव आयोग ने एलियन माना है, जिनको अपनी नागरिकता प्रमाणित करने के लिए आधार से अलग दूसरे दस्तावेज देने होंगे? सोचें, एक तरफ चुनाव आयोग पूरे देश में वोटर आई कार्ड को आधार कार्ड से जोड़ने की मुहिम चला रहा है। 40 करोड़ से ज्यादा लोग अपना वोटर आई कार्ड आधार से जोड़ चुके हैं। सरकार ने इसे अनिवार्य बनाया हुआ है। कहा गया है कि अगर कोई व्यक्ति अपने वोटर आई कार्ड को आधार से नहीं जोड़ता है तो उसे इसके वाजिब कारण बता कर चुनाव आयोग के अधिकारी को संतुष्ट करना होगा। अन्यथा उसका नाम वोटर लिस्ट से कट जाएगा। लेकिन दूसरी ओर बिहार में उसी आधार को मतदाता सत्यापन का दस्तावेज नहीं माना जा रहा है। बिहार के 14 लोगों के साथ हो रहे इस भेदभाव को खत्म करने का तरीका यह है कि चुनाव आयोग या तो बिहार के लोगों के आधार को भी मतदाता सूची के सत्यापन का दस्तावेज माने या देश भर में आधार की जरुरत खत्म करे। यह नहीं हो सकता है कि देश के दूसरे हिस्सों में तो आधार के दम पर लोग मतदाता बन सकते हैं लेकिन बिहार में नहीं बन सकते हैं। साथ ही मतदाता सूची को आधार कार्ड के साथ लिंक करने का अभियान भी चुनाव आयोग को तत्काल रोक देना चाहिए और देश भर के लिए मतदाता बनने के लिए आवश्यक दस्तावेजों की नई सूची जारी करनी चाहिए। यह भी साफ कर देना चाहिए कि अब अगर किसी का नाम मतदाता सूची में है और उसके पास वोटर आई कार्ड नहीं है तो वह आधार, राशन कार्ड और मनरेगा कार्ड के आधार पर मतदान नहीं कर सकता है। अगर चुनाव आयोग ऐसा नहीं करता है तो यह माना जाएगा कि केंद्र सरकार और चुनाव आयोग दोनों बिहार के नागरिकों को दोयम दर्जे का मानते हैं, उन पर संदेह करते हैं और उनको देश के अन्य नागरिकों से अलग मानते हैं।

इमरजेंसी के हल्ले से क्या सधेगा!

इतिहास को सिर्फ घिनौने अतीत से देखना, और फिर भविष्य के स्मार्ट सपने दिखाना एक साथ संभव नहीं हो सकता। ।।क्या आज भाजपा में कोई चन्द्रशेखर या मोहन धारिया या फिर आई से समाजहित के लिए सवाल कर सके? अगर समाज में ही सत्ता से सवाल का गहरा संकट है तो सत्तादलों में आपसी सवाल-जवाब की स्वतंत्रता कहां से आएगी। आज जब दुनिया की सर्वसत्ताएं शांति की स्थापना के लिए ही युद्ध करने पर उतारूं हो रहीं हों तो इतिहास के दृष्टिकोण से भारत के लोकतंत्र का भविष्य कैसे देखें? इतिहास को वर्तमान में देखने-समझने की दृष्टि अपने-अपने उद्देश्यों से भी तय होती है। जिस तरह से इतिहास को सत्तापक्ष देखता है, क्या उसी तरह से सत्ता प्रतिपक्ष भी देख सकता है। इसलिए पिछले दिनों जो इमरजेंसी का इतिहास कर्मठता, या कुंठा में दर्शाया गया उसको करूणा में देखने का जिम्मा समाज पर छोड़ दिया गया है। समाज सोचने पर मजबूर है कि जो इमरजेंसी इंदिरा गांधी ने पचास साल पहले लगाई थी क्या वह नरेन्द्र मोदी नहीं लगा सकते। और फिर इसकी गारंटी कौन ले सकता है? लोक के तंत्र को सत्ता के यंत्र से कुचलने की इक्कीस महीने की इमरजेंसी या आपातकाल की याद वर्तमान पीढ़ी के लिए जगाई-दर्शाई गयी। समाज के नेताओं ने और जनता ने जो अनीति जून 1975 से मार्च 1977 तक भोगी उसको अखबारों, जनसभाओं व आयोजनों से नई पीढ़ी को बताया-समझाया गया। समाज पर सत्ता द्वारा थोपे गए आपातकाल को जहां याद करना आज जरूरी था वहीं उसके दोहराए न जाने के संकल्प की शपथ भी उतना ही प्रेरक है। संकल्प के ऐसे जनजागरण के लिए समाज को सजग करने की कोशिश भी होनी ही चाहिए। सरकार ने पचास साल पहले इमरजेंसी की शुरुआत के दिन को संविधान 'हत्या' दिवस के रूप में मनाने की

गुहार लगाई है। हुए-माने गए इतिहास को शब्दों से ही गढ़ा जाता है। इसलिए शब्दों के चयन से भी सत्ता की मंशा साफ होती है। जिन पर इमरजेंसी का कहर बरपा था बेशक उनका उस पर बात करना, उस समय को याद करना लोकतंत्र के टिके रहने के लिए जरूरी है। राष्ट्रहित में भी है। लेकिन भूलना यह भी नहीं चाहिए कि इमरजेंसी के भुगतभोगी ही आज सत्ता में हैं। और इमरजेंसी का मूल कारण तो समाज-सेवा के बजाए सर्वसत्ता की लालसा ही रही है। संविधान को लोक के तंत्र के लिए ही गढ़ा गया था। समाज उसे सहेजता है। और संवारता भी है। इसलिए समाज की आशा भी रही है कि जनता द्वारा चुनी सरकार लोकतंत्र की मर्यादा में संविधान के शब्दों के चयन की मर्यादा भी रखे। प्रतिपक्ष भी इन्हीं और ऐसे ही शब्दों का उपयोग करता रहा है। अगर जून सन् 1975 में संविधान की 'हत्या' हुई होती तो आज लोकतंत्र का अमृत महोत्सव नहीं मन रहा होता। लोकतंत्र में संविधान के प्रति उत्तरदायित्व तो सत्ता पर ही रहता है। जब सत्ता समाज में ऐसे शब्दों का उपयोग करती है तो सामाजिकता का उद्देश्य भी बदलता है। लेकिन आज समाज अपने लोकतंत्र में बनाए गए संविधान का उत्सव मना रहा है। जन्म व मृत्यु से तो किसी ने भी पार नहीं पाया, लेकिन इनके बीच में ही सदाचार, समभाव व सद्भाव के जीवन का संघर्ष चलता है। तो दूसरा सवाल उठता है कि क्या आज की भाजपा सरकार में सन् 1975 की कांग्रेस सरकार की तरह लोकतंत्र है? आज बेशक दलों के लोकतंत्र मूल्यों को तिलांजलि दे दी गयी हो लेकिन तब की कांग्रेस में रहते हुए भी समाज के कुछ नेताओं ने इमरजेंसी के निर्णय पर सवाल किए थे। क्या आज भाजपा में कोई चन्द्रशेखर या मोहन धारिया या फिर आई के गुजराल हैं जो अपनी ही सत्ता से समाजहित के लिए सवाल कर सके? अगर समाज में ही सत्ता से सवाल का गहरा संकट है तो सत्तादलों में आपसी सवाल-जवाब की स्वतंत्रता कहां से आएगी। फिर समाज के लिए सत्ता से सवाल करने वाले चिरसंघर्षी जयप्रकाश नारायण की कोई जगह आज अपनी राजनीति में हैं क्या? व्यवहारिकता समझने वाले, समाज के चिंतक पत्रकार रामबहादुर राय ने चंद्रशेखर के लिखे एक संपादकीय को नयी पीढ़ी के लिए सामने रखा। यह की चन्द्रशेखर ने ही इंदिरा गांधी को जताया था कि ''जयप्रकाश नारायण राजनीतिक ताकत के लिए नहीं लड़ रहे हैं, इसलिए उन्हें राज्य की शक्ति का प्रयोग करके नहीं हराया जा सकता।'' क्या आज की सत्ता शब्दों की मर्यादा और संविधान की रक्षा में समाज को ही हराने में नहीं लगी है? भारत युवाओं की बहुसंख्या का देश है। उसमें इतिहास को सिर्फ घिनौने अतीत से देखना, और फिर भविष्य के स्मार्ट सपने दिखाना एक साथ संभव नहीं हो सकता। अतीत का घिनौनापन बढ़ेगा तो वर्तमान, और भविष्य का भी सद्भाव घटेगा। हर इमरजेंसी में समाज सजग ही रहता है।

भीख मांग कर स्पेस क्यों नहीं गए!

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भारत के एस्ट्रोनॉट शुभांशु शुक्ला के अंतरिक्ष में जाने और अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन यानी आईएसएस पर जाकर शोध करने के लिए बधाई दी और उनको शुभकामनाएं दीं। लेकिन कांग्रेस का पूरा सोशल मीडिया इकोसिस्टम, इस बात का मुद्दा बनाए हुए है कि भारत सरकार ने पैसा खर्च करके शुभांशु शुक्ला को अंतरिक्ष में क्यों भेजा, जबकि इंदिरा गांधी के समय सोवियत संघ राकेश शर्मा को मुफ्त में अंतरिक्ष लेकर गया था। अच्छे अच्छे पत्रकारों, स्तंभकारों और कांग्रेस के लिए मीडिया में तलवार भांजने वालों ने इसका तुलनात्मक ब्योरा सोशल मीडिया में डाला, जिसके मुताबिक राकेश शर्मा को सोवियत संघ मुफ्त में अपने साथ ले गया था और शुभांशु शुक्ला को स्पेसएक्स और नासा के सहयोग से 548 करोड़ रुपए में भेजा गया है। सोचें, क्या बेहूदगी है? यही तबका है, जो रोज इस बात का रोना रोता है कि भारत में रिसर्च एंड डेवलपमेंट पर खर्च नहीं किया जा रहा है। सरकार को इस बात के लिए कठघरे में खड़ा किया जाता है कि वह आरएंडडी पर खर्च कम कर रही है। दूसरी ओर सरकार खर्च करके अंतरिक्ष में शोध के लिए किसी को भेजती है तो कहा जाता है कि इंदिरा गांधी के समय तो मुफ्त में ही राकेश शर्मा अंतरिक्ष चले गए थे! राकेश शर्मा अंतरिक्ष में गए थे। वे पहले भारतीय अंतरिक्ष यात्री बने थे। वे आईएसएस पर जाकर रिसर्च नहीं कर रहे थे। शुभांशु शुक्ला रिसर्च के लिए गए हैं और इसके बाद भारत के मानव अंतरिक्ष मिशन में बड़ी भूमिका निभाने वाले हैं। राकेश शर्मा 41 साल पहले अंतरिक्ष गए थे और तब भारत की स्थिति सैकड़ों करोड़ रुपए खर्च करने की नहीं थी तो सोवियत संघ कृपा करके भारत के एस्ट्रोनॉट को ले गया था। क्या कांग्रेस समर्थक अब भी यही चाहते हैं कि कोई देश कृपा करके हमारे एस्ट्रोनॉट को अंतरिक्ष में घुमा कर ले आए? कांग्रेस की पिछली सरकारों की तारीफ और मौजूदा मोदी सरकार की आलोचना के लिए अनेक और कारण हो सकते हैं। लेकिन यह कोई आलोचना का कारण नहीं है, बल्कि यह गर्व का विषय है।

दिल्ली प्रीमियर लीग के ऑक्शन में छा गए दिग्वेश राठी, आईपीएल से भी ज्यादा पैसों की बोली लगी

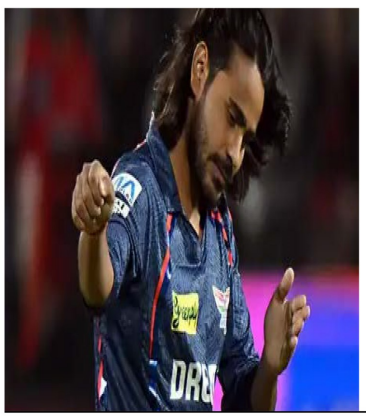

एजेंसी नई दिल्ली

दिल्ली के स्टार गेंदबाज दिग्वेश राठी ने आईपीएल 2025 में लखनऊ सुपर जायंट्स के लिए शानदार प्रदर्शन किया था। अपनी मिस्ट्री स्पिन बॉलिंग के साथ ही वह सेलिब्रेशन की वजह से भी चर्चा भी रहे। दिग्वेश को इसकी वजह से एक मैच के लिए बैन भी किया गया था। दिग्वेश पिछले सीजन दिल्ली प्रीमियर लीग में अपने प्रदर्शन के बाद चर्चा में आए थे। इस डीपीएल 2025 की नीलामी में वह दूसरे सबसे महंगे खिलाड़ी रहे। दिग्वेश राठी को आईपीएल से ज्यादा सैलरी दिल्ली प्रीमियर लीग में खेलने के लिए मिली है। लखनऊ सुपर जायंट्स ने उन्हें बेस प्राइस 30 लाख रुपये में खरीदा था। अब डीपीएल में खेलने के लिए उन्हें 38 लाख रुपये मिलेंगे। नीलामी में दक्षिण दिल्ली सुपरस्टार्ज ने 38 लाख रुपये में खरीदा। आईपीएल 2025 में उनके प्रदर्शन के बाद दिग्वेश के लिए जबरदस्त मांग देखने को मिली, जहां उन्होंने 13 मैचों में 14 विकेट लिए और 8.25 की इकॉनमी रेट से गेंदबाजी की। नीलामी के दौरान पुरानी दिल्ली 6 की ओर से भी दिग्वेश को खरीदने की कोशिश की गई, लेकिन दक्षिण दिल्ली की टीम ने अपने स्टार खिलाड़ी को हासिल करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आईपीएल में दिग्वेश ने आखिरी बार मई में लखनऊ के लिए रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ ग्रुप स्टेज के अंतिम मुकाबले में खेला था। दिल्ली प्रीमियर लीग के पहले सीजन में उन्होंने 10 मैचों में 14 विकेट लिए थे। उनकी इकोनॉमी 8 से भी कम की रही ऑक्शन में कुल 520 खिलाड़ियों की बोली लगी। तेज गेंदबाज सिमरजीत सिंह को सबसे बड़ी बोली लगी। सेंट्रल दिल्ली किंग्स के लिए वह 39 लाख रुपये में खेलेंगे। उन्होंने पिछले सीजन लीग में सबसे ज्यादा विकेट लिए थे। भारत के लिए खेल चुके बाएं हाथ के बल्लेबाज नीतीश राणा (वेस्ट दिल्ली लायंस के लिए 34 लाख रुपये) और प्रिंस यादव (न्यू दिल्ली टाइगर्स के लिए 33 लाख रुपये) में शामिल हुए।

लॉर्ड्स टेस्ट से पहले इंग्लैंड कप्तान बेन स्टोक्स ने मानी हार! जसप्रीत बुमराह को लेकर कही ये बात

एजेंसी नई दिल्ली

टीम इंडिया के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह एजबेस्टन टेस्ट में नहीं खेले लेकिन इसके बावजूद इंग्लैंड को भारतीय टीम ने घुटनों पर ला दिया। भारत ने एजबेस्टन टेस्ट 336 रनों से जीता। वहीं अब इस करारी हार के बाद इंग्लैंड की टीम में खौफ का माहौल है। बेन स्टोक्स दरअसल, बुमराह की वापसी को लेकर परेशान हैं। उन्होंने तो यहां तक कह दिया कि जसप्रीत बुमराह जैसे गेंदबाज के खिलाफ तैयारी करना ही नामुमकिन है। दरअसल, एजबेस्टन टेस्ट जीतने के बाद भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि बुमराह 10 जुलाई से शुरू होने वाले तीसरे टेस्ट में वापसी करेंगे स्टोक्स इस बार से ज्यादा खुश नहीं थे कि उन्हें एक बार फिर बुमराह के बारे में सवालों के जवाब देने होंगे। बेन स्टोक्स ने कहा कि, मैंने सोचा था कि मैं बिना जसप्रीत बुमराह के सवाल के प्रेस कॉन्फ्रेंस पूरी कर लूंगा। हम इतनी बार एक-दूसरे के खिलाफ खेलते हैं कि हमें पता है कि क्या सामना करना पड़ेगा। हम इसे ट्रेनिंग में भी लागू करते हैं। हम साइड आर्म गेंदबाजी के खिलाफ प्रैक्टिस करते हैं लेकिन वो बुमराह मैच में करते हैं वैसा प्रैक्टिस में कर पाना मुश्किल होता है। जसप्रीत बुमराह लॉर्ड्स में वापसी करेंगे तो क्या इंग्लैंड की टीम जोफ्रा आर्चर को उतारेगी? इस पर स्टोक्स ने कहा कि वो उनकी हालत देखकर ही कोई फैसला लेंगे। स्टोक्स का मनना है कि एक टीम के तौर पर इंग्लैंड को संतुलित रहना होगा, न तो जीत के बाद बहुत उत्साहित होना चाहिए और न ही हार के बाद बहुत निराश। उन्होंने कहा कि, हमने कुछ बेहतरीन जीत हासिल की हैं और कुछ बुरी हार भी देखी हैं। मुझे लगता है कि मैं और मेरी टीम इन उतार-चढ़ावों में संतुलित रहने में अच्छे हैं।

मुंबई छोड़ने के बाद महाराष्ट्र के लिए खेलेंगे पृथ्वी शॉ, क्या अब होगा टीम इंडिया में ड्रीम कमबैक

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय बल्लेबाज और मुंबई के पूर्व खिलाड़ी पृथ्वी शॉ आगामी घरेलू सत्र के लिए सोमवार को महाराष्ट्र की टीम के साथ जुड़ गये हैं। महाराष्ट्र क्रिकेट संघ ने इसकी घोषणा की। शॉ ने किसी और राज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए पिछले महीने मुंबई क्रिकेट संघ से अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) की मांग की थी, जिस पर उसकी संचालन समिति ने मुहर लगा दी थी। शॉ को खराब फिटनेस और अनुशासन संबंधी मुद्दों के कारण मुंबई की लाल गेंद टीम से बाहर कर दिया गया था । उन्होंने मुंबई के लिए अपना पिछला मैच मध्य प्रदेश के खिलाफ सैयद मुश्ताक अली टी20 ट्रॉफी के फाइनल में खेला था। महाराष्ट्र क्रिकेट संघ ने यहां जारी बयान में कहा, 'अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर और भारतीय टीम के शीर्ष क्रम के आक्रामक बल्लेबाज पृथ्वी शॉ आधिकारिक तौर पर मुंबई क्रिकेट संघ से अलग हो गये हैं और वह आगामी घरेलू सत्र में महाराष्ट्र क्रिकेट संघ का प्रतिनिधित्व करेंगे।' उन्होंने कहा, 'इस रणनीतिक बदलाव को भारतीय घरेलू क्रिकेट में एक महत्वपूर्ण विकास के रूप में देखा जा रहा है, जिससे महाराष्ट्र की टीम और मजबूत होगी। शॉ ने टेस्ट, वनडे और टी20 तीनों प्रारूपों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है और अपनी आक्रामक बल्लेबाजी और मैच जीतने की क्षमता से इंडियन प्रीमियर लीग और घरेलू क्रिकेट में लगातार प्रभावित किया है। महाराष्ट्र क्रिकेट संघ के अध्यक्ष रोहित पवार ने कहा, 'उनके शामिल होने से रुतुराज गायकवाड़, अंकित बावने, राहुल त्रिपाठी, मुकेश चौधरी और रजनीश गुरबानी जैसे अनुभवी खिलाड़ियों वाली पहले से ही प्रतिभाशाली टीम की मजबूती और बढ़ेगी। शॉ का अंतरराष्ट्रीय और आईपीएल अनुभव खासकर टीम में युवा खिलाड़ियों को सलाह देने के लिए अमूल्य होगा।' शॉ ने कहा कि यह कदम उन्हें क्रिकेटर के तौर पर आगे बढ़ने में मदद करेगा। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि करियर के इस पड़ाव पर महाराष्ट्र की टीम से जुड़ने से मुझे क्रिकेटर के तौर पर आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। मैं पिछले कुछ वर्षों में मुंबई क्रिकेट संघ की तरफ से मिले मौके और समर्थन के लिए आभारी रहूंगा।'

367 रन पर खेल रहा था कप्तान और कर दी पारी घोषित, ब्रायन लारा के 400 रनों का रिकॉर्ड टूटते-टूटते बचा

एजेंसी बुलावायो

क्रिकेट इतिहास में कुछ ही रिकॉर्ड ऐसे हैं जो समय के साथ अपनी चमक बरकरार रखते हैं और ब्रायन लारा का नाबाद 400 रनों का ऐतिहासिक स्कोर उनमें से एक है। 12 अप्रैल 2004 को वेस्टइंडीज के सेंट जॉन्स में इंग्लैंड के खिलाफ खेले गए चौथे टेस्ट मैच में लारा ने यह अविश्वसनीय उपलब्धि हासिल की। अब टेस्ट क्रिकेट में सबसे बड़ी पारी का ब्रायन लारा का रिकॉर्ड टूटने ही वाला था। जी हां, आप सही पढ़ रहे हैं। साउथ अफ्रीका के कप्तान वियान मुल्डर 367 रनों से तक पहुंचा गए थे। वह आउट नहीं हुए फिर लेकिन लारा का रिकॉर्ड बच गया। जिम्बाब्वे और साउथ अफ्रीका के बीच बुलावायो में टेस्ट मैच हो रहा है। मैच के दूसरे दिन पहले सेशन में वियान मुल्डर ने तिहरा शतक लगाया। वह लंच के समय 367 रन बनाकर नाबाद थे। टीम का स्कोर 5 विकेट पर 626 रन था। लंच के दौरान ही मुल्डर ने पारी घोषित करने का ऐलान कर दिया। मैच में 3 दिन से ज्यादा का समय बचा है। जिम्बाब्वे की टीम को आसानी से ऑल आउट भी किया जा सकता है। इसके बाद भी मुल्डर ने वो कर दिखाया, जो शायद कोई कप्तान या खिलाड़ी नहीं करता। 334 गेंद पर 49 चौके और 4 छक्कों की मदद से मुल्डर ने नाबाद 367 रन बनाए। वियान मुल्डर पिछले साल तक टेस्ट में नंबर 7 और 8 पर बैटिंग किया करते थे। पिछले साल के अंत में बांग्लादेश में शतक लगाने के बाद मुल्डर को नंबर 3 पर प्रमोट कर दिया गया। वह 367 रन बनाकर नाबाद रहे। यह टेस्ट इतिहास में घर से बाहर किसी भी बल्लेबाज का सबसे बड़ा स्कोर है। अभी तक कोई भी बल्लेबाज टेस्ट में विदेश में 350 रन नहीं बना पाया था। इसके साथ ही यह टेस्ट का 5वां सबसे बड़ा स्कोर है। उससे पहले लारा के नाम ही 1994 में इंग्लैंड के खिलाफ बनाए गए 375 रनों का रिकॉर्ड था, जिसे 2003 में ऑस्ट्रेलिया के मैथ्यू हेडन ने 380 रन बनाकर तोड़ा था। लारा ने एक बार फिर साबित कर दिया कि वह कितने महान बल्लेबाज हैं। उन्होंने धैर्य, दृढ़ता और शानदार स्ट्रोकप्ले का प्रदर्शन करते हुए 582 गेंदों का सामना किया, जिसमें 43 चौके और 4 छक्के शामिल थे। लारा की इस पारी ने दुनिया भर के क्रिकेट प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया था। यह सिर्फ रनों का अंबार नहीं था, बल्कि कलात्मक बल्लेबाजी और एकाग्रता का बेजोड़ संगम था। इस पारी के दौरान उन्होंने अपने ही बनाए गए रिकॉर्ड को तोड़ा और टेस्ट क्रिकेट में एक नया अध्याय लिखा था।

मेरी चिंता मत करो... कैंसर से जूझ रही बहन ने आकाश दीप को दिया मैसेज

एजेंसी नई दिल्ली

भारत के तेज गेंदबाज आकाश दीप ने इंग्लैंड के खिलाफ एजबेस्टन में खेले गए दूसरे टेस्ट मैच में शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने 10 विकेट लेकर टीम को 336 रनों से जीत दिलाई। जसप्रीत बुमराह की जगह टीम में शामिल हुए आकाश ने अपनी गेंदबाजी से भारत को जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई। मैच के बाद आकाश ने यह प्रदर्शन अपनी बहन अखंड ज्योति को समर्पित किया। ज्योति कैंसर से जूझ रही हैं और उनका इलाज चल रहा है। ज्योति ने आकाश के इस समर्पण पर भावुक प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि उन्हें उम्मीद नहीं थी कि आकाश सार्वजनिक रूप से उनकी बीमारी के बारे में बात करेंगे आकाश की बहन ज्योति स्टेज तीन के कैंसर से लड़ रही हैं। उन्होंने इंडिया टुडे से बात करते हुए कहा, 'मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि आकाश ऐसा कुछ कहेगा। शायद हम इसके बारे में सार्वजनिक रूप से बात करने के लिए तैयार नहीं थे, लेकिन जिस तरह से वह भावुक हो गया और मेरे लिए यह बात कही। इसे मुझे समर्पित किया। यह बहुत बड़ी बात है। यह दिखाता है कि वह हमारे परिवार और मुझसे कितना प्यार करता है। घर पर ऐसी स्थिति होने के बावजूद, उसने वहां ऐसा प्रदर्शन किया और विकेट लिए। यह बहुत बड़ी बात है। मैं वह हूं जिसके वह सबसे करीब है।' इंग्लैंड दौरे से पहले परिवार के समर्थन के बारे में बात करते हुए ज्योति ने याद किया कि इंग्लैंड दौरे पर जाने से पहले वह आकाश से हवाई अड्डे पर मिली थीं और उन्होंने उससे कहा था कि वह अपने क्रिकेट पर ध्यान दे। उन्होंने कहा, 'यह भारत के लिए गर्व की बात है। उसने 10 विकेट लिए हैं। इंग्लैंड दौरे से पहले, हम उससे हवाई अड्डे पर मिलने गए थे। मैंने उससे कहा था कि मैं बिल्कुल ठीक हूं, मेरे बारे में चिंता मत करो और देश के लिए अच्छा करो। मैं तीसरे स्टेज में हूं और डॉक्टर ने कहा है कि इलाज छह महीने तक चलेगा, जिसके बाद हम देखेंगे।' एजबेस्टन मैच के बाद के भावुक पल के बारे में बताते हुए ज्योति ने कहा कि टेस्ट मैच खत्म होने के बाद आकाश ने उन्हें दो बार वीडियो कॉल किया, एक बार रात में और फिर सुबह 5 बजे। आकाश ने मुझसे कहा, 'चिंता मत करो, पूरा देश हमारे साथ है।

व्यापार

डॉलर नहीं, लोकल करेंसी में... रूस के इस प्लान से धुआं-धुआं ट्रंप, भारत को क्या होगा बड़ा फायदा

एजेंसी नई दिल्ली

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार में राष्ट्रीय मुद्राओं के इस्तेमाल को बढ़ाने की अपील की है। उन्होंने ब्रिक्स प्लेटफॉर्म पर एक स्वतंत्र निपटान प्रणाली (सेटेलमेंट सिस्टम) बनाने का प्रस्ताव रखा है। इसका मकसद लेनदेन को तेज, अधिक कुशल और सुरक्षित बनाना है। रूसी राष्ट्रपति की ओर से ब्रिक्स देशों के बीच राष्ट्रीय मुद्राओं में 'स्वतंत्र निपटान प्रणाली' बनाने की अपील से अमेरिका को कई तरह से नुकसान हो सकता है। यही वजह है कि डोनाल्ड ट्रंप इस प्लान से धुआं-धुआं हैं। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की ब्रिक्स देशों के बीच राष्ट्रीय मुद्राओं में 'स्वतंत्र निपटान प्रणाली' स्थापित करने की अपील अमेरिका के लिए चिंता का विषय क्यों है, यह समझने के लिए हमें डॉलर के वैश्विक प्रभुत्व और उसके अमेरिका के लिए निहितार्थों को समझना होगा। दरअसल, दशकों से अमेरिकी डॉलर दुनिया की प्रमुख आरक्षित मुद्रा (रिजर्व करेंसी) रहा है। इसका मतलब यह है कि दुनिया भर के केंद्रीय बैंक अपने विदेशी मुद्रा भंडार का बड़ा हिस्सा डॉलर में रखते हैं। ज्यादातर अंतरराष्ट्रीय व्यापार, विशेष रूप से तेल और अन्य महत्वपूर्ण वस्तुओं का व्यापार, डॉलर में ही होता है। इस दबदबे ने अमेरिका को ग्लोबल अर्थव्यवस्था में अनूठा दर्जा दिया है। इससे उसे कम ब्याज दरों पर उधार लेने और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली पर महत्वपूर्ण नियंत्रण बनाए रखने की क्षमता मिलती है। डॉलर के इस प्रभुत्व से अमेरिका को कई प्रत्यक्ष लाभ मिलते हैं। एक तो अमेरिकी सरकार अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए कम उधार लागत पर धन जुटा सकती है। कारण है कि डॉलर की वैश्विक मांग हमेशा बनी रहती है। दूसरा, वह डॉलर के प्रभुत्व का इस्तेमाल आर्थिक दबाव के उपकरण के रूप में कर सकता है, जैसा कि उसने रूस जैसे देशों पर प्रतिबंध लगाने में किया है। डॉलर-आधारित वित्तीय प्रणाली से किसी देश को बाहर करके अमेरिका उस देश की अर्थव्यवस्था को गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है। इससे उसकी भू-राजनीतिक शक्ति बढ़ती है।इसके अलावा, अमेरिकी कंपनियों के लिए अंतरराष्ट्रीय व्यापार करना आसान और सस्ता होता है। कारण है कि उन्हें लगातार मुद्रा विनिमय दरों की चिंता नहीं करनी पड़ती और अमेरिका अपनी महंगाई का कुछ हिस्सा अन्य देशों को निर्यात कर सकता है। डॉलर की मजबूत वैश्विक मांग उसकी घरेलू महंगाई को कम रखने में मदद करती है। पुतिन का BRICS देशों के बीच लोकर करेंसी में व्यापार करने का प्रस्ताव दरअसल ' डी-डॉलराइजेशन ' के एक बड़े वैश्विक प्रयास का हिस्सा है। इसका मकसद अंतरराष्ट्रीय व्यापार में डॉलर पर निर्भरता को कम करना और अन्य मुद्राओं, जैसे चीनी युआन, भारतीय रुपया या रूसी रूबल में लेनदेन को बढ़ावा देना है। अगर ब्रिक्स जैसे बड़े आर्थिक समूह, जिसमें ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका और अब मिस्र, इथियोपिया, ईरान, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे नए सदस्य भी शामिल हैं, डॉलर में व्यापार करना बंद कर देते हैं तो डॉलर की वैश्विक मांग में बड़ी कमी आ सकती है। इससे डॉलर का मूल्य गिर सकता है। अमेरिका को जो सभी वित्तीय और भू-राजनीतिक फायदे बताए गए हैं, वे कम हो जाएंगे। यही कारण है कि डोनाल्ड ट्रंप और अमेरिकी प्रशासन इस योजना से टेंशन में है। अगर डी-डॉलराइजेशन व्यापक रूप से सफल होता है तो यह अमेरिकी प्रतिबंधों की प्रभावशीलता को कम कर देगा। इससे रूस जैसे देश अमेरिकी दबाव से बच निकलेंगे। इससे वैश्विक वित्तीय प्रणाली पर अमेरिका का नियंत्रण कमजोर होगा, जो अमेरिकी विदेश नीति और आर्थिक शक्ति के लिए बड़ा झटका होगा। ट्रंप का मानना है कि डॉलर का कमजोर होना अमेरिकी अर्थव्यवस्था के लिए अस्थिरता ला सकता है। इससे महंगाई बढ़ सकती है और देश में निवेश कम हो सकता है। डॉलर में सौदे न होने और राष्ट्रीय मुद्राओं में व्यापार को बढ़ावा देने से भारत को कई बड़े फायदे हो सकते हैं। भारत को अपने अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए अमेरिकी डॉलर पर अत्यधिक निर्भर रहना पड़ता है। इससे डॉलर के मूल्य में उतार-चढ़ाव का भारतीय अर्थव्यवस्था पर सीधा असर पड़ता है। इससे आयात महंगा और निर्यात कम प्रतिस्पर्धी हो सकता है। राष्ट्रीय मुद्राओं में व्यापार करने से भारत इस करेंसी रिस्क को कम कर सकता है।

दुश्मन को 10 में 1 बार... तुर्की की कंपनी को झटका, दिल्ली हाईकोर्ट में सेलेबी की याचिका खारिज, क्या चलीं दलीलें

एजेंसी नई दिल्ली

तुर्की की कंपनी सेलेबी एविएशन को बड़ा झटका लगा है। दिल्ली हाईकोर्ट ने सोमवार को उसकी याचिका खारिज कर दी। इस याचिका में उसने ब्यूरो ऑफ सिविल एविएशन सिक्योरिटी (BCAS) की ओर से मई में एयरपोर्ट सिक्योरिटी क्लीयरेंस रद्द करने के फैसले को चुनौती दी थी। जस्टिस सचिन दत्ता ने सेलेबी एयरपोर्ट सर्विसेज की सुरक्षा मंजूरी रद्द करने के फैसले को सही ठहराया। सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए यह फैसला लिया था। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सेलेबी के विरोध को गलत बताया। दलील दी कि यह मामला देश की सुरक्षा से जुड़ा है। सरकार बिना कोई कारण बताए सुरक्षा मंजूरी रद्द कर सकती है। मेहता ने कहा कि दुश्मन 10 बार कोशिश कर सकता है और एक बार सफल हो सकता है। लेकिन, देश को हर बार सफल होना होगा। एयरपोर्ट और कार्गो हैंडलिंग के ठेके बहुत संवेदनशील होते हैं। कारण है कि कर्मचारियों को एयरपोर्ट के हर कोने की जानकारी होती है। तुर्की की ग्राउंड हैंडलिंग कंपनी सेलेबी एयरपोर्ट सर्विसेज इंडिया ने सरकार की ओर से सुरक्षा मंजूरी रद्द करने के एक दिन बाद दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। सेलेबी ने कहा था कि सुरक्षा मंजूरी रद्द करना प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन है। ऐसा बिना किसी पूर्व सूचना, सुनवाई या उचित कारण के किया गया। कंपनी ने 'राष्ट्रीय सुरक्षा' को लेकर अस्पष्ट चिंताएं जताई थीं। BCAS ने सेलेबी की सुरक्षा मंजूरी तत्काल रद्द करने की घोषणा की थी। इससे दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु सहित नौ भारतीय हवाई अड्डों पर कंपनी का कामकाज प्रभावित हुआ। सेलेबी ने अदालत से बीसीएएस के फैसले को रद्द करने और उसे काम करने की अनुमति देने की अपील की थी। कंपनी ने यह भी कहा था कि नागरिक उड्डयन प्राधिकरण को उसके खिलाफ कोई भी 'दंडात्मक कार्रवाई' करने से रोका जाए। कंपनी ने याचिका में कृया दी थी दलील? सेलेबी ने अपनी याचिका में कहा था कि आदेश में 'राष्ट्रीय सुरक्षा' के अलावा कोई खास कारण नहीं बताया गया है। कंपनी के अनुसार, बिना किसी ठोस कारण के यह आदेश तर्कसंगतता और प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन करता है और मनमाना है। कंपनी ने अपनी याचिका में कहा था कि आदेश भारत के संविधान के अनुच्छेद 14 और 19(1)(जी) का उल्लंघन करता है और प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों के भी खिलाफ है, क्योंकि सुनवाई का कोई अवसर नहीं दिया गया। सेलेबी दिल्ली कार्गो टर्मिनल मैनेजमेंट इंडिया ने भी दिल्ली हाईकोर्ट में एक अलग याचिका दायर कर सुरक्षा मंजूरी रद्द करने के आदेश को रद्द करने की मांग की थी। सरकार का यह आदेश भारत और पाकिस्तान के बीच सैन्य संघर्ष के दौरान तुर्की की ओर से पाकिस्तान का समर्थन करने के बाद तुर्की के खिलाफ व्यापक बहिष्कार के आह्वान के बाद आया था। सेलेबी ने अदालत को बताया कि वह कोई तुर्की संगठन नहीं है और उसका किसी भी विदेशी सरकार से कोई संबंध नहीं है। कंपनी ने कहा कि उसकी होल्डिंग कंपनी के 65% शेयर वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित निवेशकों के पास हैं। सेलेबी ने अपनी याचिका में कहा, '14 मई को बीसीएएस को एक स्वैच्छिक संचार भेजा गया था। इसमें सार्वजनिक रूप से बदनाम करने के अभियान के बारे में बताया गया था और यह भी समझाया गया था कि इस अभियान में कोई सच्चाई नहीं है। लेकिन, इस पर विचार नहीं किया गया।' कंपनी ने कहा, 'अंतरिम उपाय के तौर पर याचिकाकर्ता को हवाई अड्डों का संचालन करने की अनुमति दी जानी चाहिए और याचिकाकर्ता की सुरक्षा मंजूरी रद्द करने के आदेश पर रोक लगाई जानी चाहिए।' कंपनी ने अदालत से सरकार को दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे, केरल के कोचीन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे, बेंगलुरु के केम्पेगौड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे, हैदराबाद के राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे और गोवा के मनोहर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर अपने संचालन को जारी रखने की अनुमति देने का निर्देश देने का आग्रह किया।

स्मार्टवर्क्स कोवर्किंग स्पेसेज का आईपीओ 10 जुलाई को खुलेगा, मूल्य दायरा 387-407 रुपये प्रति शेयर

एजेंसी नई दिल्ली

स्मार्टवर्क्स कोवर्किंग स्पेसेज लिमिटेड ने अपने 583 करोड़ रुपये के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए 387-407 रुपये प्रति शेयर का मूल्य दायरा तय किया है। कंपनी ने सोमवार को जारी बयान में कहा कि आईपीओ 10 जुलाई को खुलेगा और 14 जुलाई का संपन्न होगा। बड़े (एंकर) निवेशक नौ जुलाई को बोली लगा पाएंगे। स्मार्टवर्क्स कोवर्किंग स्पेसेज ने अपने आईपीओ के आकार में कटौती की है। नए निर्गम को 550 करोड़ रुपये से घटाकर 445 करोड़ रुपये कर दिया गया है, जबकि बिक्री पेशकश (ओएफएस) को 67.59 लाख शेयर से घटाकर 33.79 लाख शेयर कर दिया गया है। इससे इसका कुल आकार 583 करोड़ रुपये बैठता है। स्मार्टवर्क्स कोवर्किंग स्पेसेज लिमिटेड एक प्रमुख सह-कार्यस्थल प्रदाता कंपनी है। यह बेंगलुरु, मुंबई महानगर क्षेत्र, हैदराबाद, गुरुग्राम और चेन्नई जैसे शहरों में काम कर रही है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक दयाराम दिव्य द्वारा मुद्रक वेदांत प्रभाकर, मेधा कम्प्यूटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, ऑफिस नं. 128, वार्ड नं. 25, नंदभवन कांवाखेड़ा पार्क के पास, भीलवाड़ा 311001 (राज.) से मुद्रित एवं एस-20, प्रतापनगर, भीलवाड़ा (राज.) से प्रकाशित। संपादक दयाराम दिव्य 96949 57624, 87695 58132 * PRB एक्ट के तहत ख़बरों के चयन के लिए उत्तरदायी। सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र भीलवाड़ा होगा